4

धन्य ते प्राणि...

धन्य ते प्राणि, जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।टेक।।
रहित सप्तभय, तत्त्वारथ में चित्त, न संशय आन।
कर्म कर्मफल की नहिं इच्छा, पर में धरत न ग्लान।।१।।
धन्य ते प्राणी जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।

सकल भाव में मूढ़ दृष्टि तज, करत साम्य रस पान।
आतम धर्म बढ़ावैं वा, परदोष न उचरैं वान।।२।।
धन्य ते प्राणी जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।

निज स्वभाव वा जैन धर्म में, निज पर थिरता दान।
रत्नत्रय महिमा प्रगटावें, प्रीति स्वरूप महान।।३।।
धन्य ते प्राणी जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।

ये वसु अंग सहित निर्मल यह, समकित निज गुण जान।
'भागचन्द' शिव महल चढ़न को, अचल प्रथम सोपान।।४।।
धन्य धन्य ते प्राणी जिनके तत्त्वारथ श्रद्धान।।

वे प्राणी धन्य हैं जिन्हें तत्त्वों का सम्यक् श्रद्धान हो जाता है।।टेक।।

ऐसे प्राणी सप्त भयों से रहित होते हैं, इनका उपयोग तत्त्वों के चिन्तन में रत रहता है और इन्हें तत्त्वों के स्वरूप में कोई शंका नहीं होती। ऐसे जीव कर्म व उसके फल की इच्छा भी नही रखते हैं और पर में हीनाधिकता का भाव नहीं भी रखते हैं।।१।।

तत्त्वश्रद्धानी जीव सकल पदार्थों में मिथ्या मान्यता का त्याग कर समता रस का पान करते हैं। वे आत्मा के धर्म को बढ़ाते हैं और दूसरों के दोषों को प्रगट करने वाले वचन नहीं कहा करते ।।२।।

तत्त्व श्रद्धानी प्राणी अपने आत्म स्वभाव में और जैन धर्म के सिद्धांतों में स्थिर रहते हैं। वे अपने स्वरूप में विशेष प्रीति करते हुये रत्नत्रय की महिमा प्रगट करते हैं।।३।।

कविवर भागचन्दजी कहते हैं कि तत्त्वश्रद्धानी जीव आठों अंग सहित निर्मल सम्यक्त्व गुण को अपना गुण अनुभव करते हैं और यह आत्मानुभव, मोक्ष महल आरोहण के लिये स्थिर रहने वाला प्रथम चरण है। अतः तत्त्वों के सम्यक् श्रद्धान करने वाले वे प्राणी धन्य हैं।।४।।